भूमिका

रस के घनानन्द ने प्रेम के जागतिक प्रकाशन को निर्दिष्ट कर करते हुए कहा था –

प्रेम को महोदधि अपार हेरिकै, विचार,
बापुरो हहरि बार ही ते फिरि आयौ है।
ताही एक रस है, विबस अवगाहै दोऊ,
नेही हरि राधा जिन्हें देखे सरसायौ है।
ताकी कोऊ तरल तरंग–संग छूट्योकन,
पूरि लोक लोकनि उमंगि उफनायौ है।

राधा और कृष्ण के प्रेम के अपार सागर के उमड़ने से कुछ बूदें फैल गई तथा उसकी उमंग का उफान सारे संसार में व्याप्त हो गया। इसी राधा कृष्ण के प्रेम का प्रकाशन रसखान के काव्य में व्याप्त है। उनके माधुर्य भक्ति के केन्द्र में जो प्रेम स्वरूप है उसका अध्ययन एक गंभीर विषय है। हमारे आचार–विचार, संस्कार, सभी का उत्स संस्कृति है। संस्कृति के परिवेश में आन्तरिक व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रेम, उत्साह, धैर्य तितिक्षा, सभी मानव के विकास का संस्थान है। प्रेम व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यहीं से मानवता का उद्‌भव होता है, जब व्यक्ति प्रभु से प्रेम करना प्रारंभ करता है वह जगत् के प्राणी–प्राणी के प्रति करूणाद्र हो उठता है यहीं से विश्व मानवता का जन्म होता है। साहित्य सदा मानवता का पक्षधर है। समाज के विकास क्रम में ही साहित्य पनपता है तथा साहित्य विगड़ते हुए समाज की आलोचना करता है।

आज के युग में मानवता का ह्रास हो रहा है। जातिवाद, सम्प्रदायवाद, वर्गवाद, आतंकवाद के पीछे प्रेम का अभाव ही है। ऐसी स्थिति में 'रसखान के काव्य में प्रेम का स्वरूप' अध्ययन का विषय बनाना स्वाभाविक है। इस विषय को 6 अध्यायों में विभाजित कर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम अध्याय में 'संस्कृति की अवधारणा' को प्रस्तुत किया गया है अर्थ, परिभाषा तथा विशेषताओं के रेखांकन के पश्चात् भारतीय संस्कृति के स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय संस्कृति में विविध संस्कृतियों का संगम भागवतकार यह कथन इस तथ्य की ओर इंगित करता है–

किरात–हूणान्ध्र–पुलिन्द–पुक्कसाः
आभरि–शुह्मा यवनाः खसादयः
येऽन्ये च पाषास्तदयाश्रयाश्रयः
शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः

किरात, हूण, आंध्र, पुलिन्द, पुक्कंस, आमीर, शुन्ग, यवन, खस, शक जातियाँ एक बार भगवान के आश्रम में आते ही शुद्ध हो गई।

वस्तुतः विभिन्न जातियां विभिन्न संस्कृतियों के साथ भारत में आकर मिल गई तथा सभी मिलकर भारतीय संस्कृति बन गयी। आर्य और द्रविण संस्कृतियों का प्रथम मिलन हुआ जिससे भारतीय संस्कृति की पाचन शक्ति बढ़ गयी। इसके बाद बौद्ध, सुमेरियन यवन संस्कृतियां भी भारतीय संस्कृति में शामिल हो गयीं।

सम्प्रति भारतीय संस्कृति को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है – आर्यों का ज्ञान + द्रविणों की कला + आधुनिक विज्ञान + अन्य संस्कृति = भारतीय संस्कृति

यद्यपि यह समीकरण स्थूल मानक ही बता पाता है, रसायनिक परिवर्तनशीलता विवेवचनीय विषय है। हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता समन्वयशीलता है।

द्वितीय अध्याय में 'मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, परम्परा और काव्य' में मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। मध्यकालीन संस्कृति जिसमें भक्ति भावना का प्राधान्य है। विविध संस्कृतियों के रसायन से मध्यकालीन संस्कृति विकसित हुई है। राम और कृष्ण भक्ति प्रवाह को विशेष रूप से पहचाना जा सकता है, इस कृषि भक्ति काव्य प्रमुख काव्यकारों को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय में रसखान के परिवेश को प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य का रचनात्मक व्यक्तित्व, इस अध्याय का शीर्षक है इसमें परिवेश के प्रभाव को रचनाओं की संवेदना से जोड़कर दिखाया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'रसखान काव्य का काव्य शास्त्रीय मूल्यांकन' प्रस्तुत किया गया है। इसके दो पक्ष हैं प्रथम पक्ष अनुभूति और संवेदना का है दूसरा पक्ष अभिव्यक्ति सौन्दर्य का। रसखान की कविता मूलरूप से रस की कविता है। उनकी कविता में अलंकारों को ढूंढ़ना न्याय संगत नहीं है, क्योंकि सहज भावोच्छलन में अलंकार गौण हो जाते हैं, संवेदना ही प्रधान रहती है।

पंचम अध्याय, इस अध्याय में 'रसखान के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन है। इस शोध प्रबन्ध का प्रारंभ संस्कृति से होता है तथा इस अन्तिम अध्याय में सांस्कृतिक मूल्यांकन है संस्कृति को विशेष महत्व देने का कारण उनके काव्य में प्रेम के स्वरूप को दर्शाना रहा है। रसखान माधुर्य भाव के उदान्त कति हैं। उनकी कविता का उत्स श्रीकृष्ण का प्रेम है। रामविलास शर्मा का यह कथन कि रामायण और महाभारत हमारे संस्कृति के आधार ग्रंथ है। रामायण के महापुरूष राम तथा महाभारत के कृष्ण हैं। वैसे रसखान ने भागवत के कृष्ण को ही आधार बनाया है इस ग्रंथ में भी भारतीय संस्कृति का भक्ति मार्ग विवेचन है। कृष्ण का चरित्र इस ग्रंथ में भक्तिमार्गी विवेचन है। कृष्ण का चरित्र इस ग्रंथ में भक्ति के आश्रय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कृष्ण का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में किया गया है। इसके प्रश्चात पुराणों में उनका व्यापक वर्णन है, 'ब्रह्म पुराण' 'ब्रह्म वैवर्त पुराण; 'भागवत पुराण' में उनका विशेष रूपांकन किया गया है। उनका विशद विवेचन महाभारत में भी है किन्तु वहां उनका रूप योगिराज और नीतिज्ञ का है। भक्त कवियों का उपजीव्य मुख्य रूप से भागवत है। सूरदास तथा अष्टछाप के कवियों के अतिरिक्त श्रीकृष्ण का रस पेशल वर्णन विद्यापति, जयदेव, मीरा, तथा रसखान ने किया है। कृष्ण का भक्त कवि पाषाण, तथा गाय बनने को भी तैयार है, उस कौवे की भाग्य की भी सराहना करता है जो भगवान के हाथ से रोटी लेकर भागता है। भक्ति भावित रसमयता गृहस्थ जीवन की अनिवार्य अंग है। भक्त को मोक्ष नहीं भक्ति चाहिए। रसखान को कृष्ण का सान्निध्य चाहिए, चाहे उन्हें कुछ भी झेलना पड़े। प्रेम देवता का जो यहां चित्र है वह अद्‌भुत, मनोरम है, रसपेशल है। इस

प्रेम की आभा में भारतीय संस्कृति प्रस्फुटित होती है। संस्कृति यदि जीवन का संस्कार देती है तो प्रेम वह संस्कार है जो मनुज के मनुजत्व के साथ देवत्व भी प्रदान करता है, वैसे मनुजत्व ही साहित्य की उपासना है। इसीलिए महर्षि व्यास ने कहा था – 'गुध्यं ब्रह्म तदिद् ब्रनीमि नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित, मनुष्य से बढ़ कर इस सांर में कुछ भी नहीं है और मनुष्यता का प्राणत्व है प्रेम। वस्तुतः इस अध्याय में सांस्कृतिक तत्व के आयाम में रसखान के काव्य को दिखाया गया है। षष्ठ अध्यायः में उपसंहार प्रस्तुत किया गया है। इस शोध कार्य के पूर्ण करने में हमें अपने गुरूओं से एवं विद्वानों से जो सहायता मिली है, उनके प्रति आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है।